पाठ-3

भाई-बहन

- सत्यवती मलिक

आइए सीखें

■ भाई-बहन के 'प्यार-स्नेह' जैसे मानवीय गुण ■ हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू के शब्द ■ मुहावरे ■ संज्ञा एवं उसके प्रकार।

''माँ! माँ! हाय! माँ! माँ हाय!'' एक बार, दो बार, पर तीसरी बार बेटे की 'हाय! हाय!' की करुण पुकार सुनकर माँ सावित्री सहन न कर सकी। कार्बन-पेपर और कॉपी वहीं कुर्सी पर पटककर शीघ्र ही उसने बाथ-रूम के दरवाजे के बाहर खड़े कमल को गोद में उठा लिया और पुचकारते हुए कहा—''बच्चे सबेरे-सबेरे ऐसे नहीं रोते।''

''तो निर्मला मेरा गाना क्यों गाती है, और उसने मेरी सारी कमीज छींटे डालकर गीली क्यों कर दी?''

स्नानागार में अभी भी पतली-सी आवाज में निर्मला गुनगुना रही थी—''एक....लड़का...था...वह रोता...रहता''

''बड़ी दुष्ट लड़की है! नहाकर बाहर निकले तो सही, ऐसी पिटाई करूँगी कि वह भी जाने।'' माँ से यह आश्वासन पाकर कमल कपड़े बदलने चला गया।

न जाने कितनी मंगल कामनाओं, भावनाओं और आशीर्वादों को लेकर सावित्री ने अपने भाई के जन्मदिन पर उपहार भेजने के लिए एक श्वेत रेशमी कपड़े पर तितली की सुन्दर आकृति खींची है। हल्के नीले, सुनहरे और गहरे लाल रंग के रेशम के तारों के साथ-ही-साथ न जाने कितनी मीठी स्मृतियाँ भी उसके अन्त:स्थल में उठ-उठकर बिंधी-सी जा रही हैं। अनेक वन, पर्वत, नदी, नाले तथा मैदान के पार दूर से एक मुखाकृति बार-बार नेत्रों के सम्मुख आकर उसके रोम-रोम को पुलकित कर रही है। कभी ऐसा भी लगने लगता है, मानो सामने दीवार पर लटकी हुई उसके भाई नरेन्द्र की तस्वीर हँसकर बोल उठेगी। सावित्री

शिक्षण संकेत

▸ कहानी का सार छात्रों की सहभागिता से पूछें ▸ कहानी को उचित हाव-भाव के साथ पढ़ें और छात्रों से पढ़वाएँ ▸ जुलूस और मेले के बारे में छात्रों को आवश्यक जानकारी दें ▸ 'कहानी-लेखन' की कला से बच्चों को परिचित कराएँ ▸ छात्रों को 'लोकगीत' का संग्रह करने के लिए प्रोत्साहित करें।

की आँखों में प्रेमाश्रु छलक उठे। तितली का एक पंख काढ़ा जा चुका है, किन्तु दूसरा आरम्भ करने से पूर्व ही कमल की सिसकियों और आँसुओं ने सावित्री को वहाँ से उठने को विवश कर दिया।

स्कूल की चीजों को बैग में डालते हुए निर्मला के निकट खड़े होकर सावित्री ने ऊँची आवाज में कहा—''निर्मला, तुझे शर्म नहीं आती क्या? इतनी बड़ी हो गई है। कमल तुझसे पूरे चार वर्ष छोटा है। किसी भी चीज को उसे छूने तक नहीं देती। हर घड़ी बेचारा रोता रहता है। अगर उसने तेरे पेन्सिल-बॉक्स को तनिक देख लिया तो क्या हुआ?''

निर्मला सिर नीचा किए मुस्करा रही थी। यह देखकर माँ का गुस्सा और भी अधिक बढ़ गया। उसने ऊँचे स्वर में कहना शुरू किया, ''रानीजी, बड़े होने पर पता चलेगा, जब इन्हीं दुर्लभ सूरतों को देखने के लिए तरसोगी। भाई-बहन सदा साथ-साथ नहीं रहते।''

माँ की झिड़कियों ने बालिका के नन्हें मस्तिष्क को एक उलझन में डाल दिया। विस्मित-सी हो वह केवल माँ के क्रुद्ध चेहरे की ओर एक स्थिर, गम्भीर, कुतूहलपूर्ण दृष्टि डालकर रह गई।

करीब आधे घण्टे बाद किंचित उदास सा मुख लिए निर्मला जब कमल को साथ लेकर स्कूल चली गई, तब सावित्री को अपनी सारी बक-बक सारहीन प्रतीत होने लगी। सहसा उसे याद आने लगी, बहुत वर्ष पहले की एक बात, वह नरेन्द्र से क्यों रूठ गई थी? छी:! एक तुच्छ-सी बात पर, किन्तु आज जो बात तुच्छ जान पड़ती है, उन दिनों उसी तुच्छ, निकृष्ट, ज़रा-सी बात ने उतना उग्र रूप क्यों धारण कर लिया था? जिसके कारण भाई-बहन ने आपस में पूरे एक महीने तक एक-दूसरे-से बात भी नहीं की थी।

एकाएक सावित्री के चेहरे पर हँसी प्रस्फुटित हो उठी, जब उसे स्मरण हो आया, नरेन्द्र का दिन-रात नए-नए रिकॉर्ड लाकर ग्रामोफोन पर बजाना; और एक दोस्त से दूरबीन माँगकर आते-जाते बहन के कमरे की ओर झाँकना; और जानना-चाहना कि इन दोनों चीजों का प्रभाव बहन पर पड़ रहा है या नहीं। उसे यह याद करके खूब हँसी आई कि तब वह कैसे मौन धारण किए हुए मिठाई की तश्तरी नरेन्द्र के कमरे में रख आती थी।

●

रेशमी कपड़े को पुन: हाथ में लेकर काढ़ते हुए सावित्री ने मन-ही-मन प्रतिज्ञा की कि अब से वह बच्चों को बिलकुल डाँट-फटकार नहीं लगाएगी। इधर बारह बजे की आधी छुट्टी में खाना खाते समय फिर कई आरोप कमल की ओर से मौजूद थे—''निर्मला मुझे अपने साथ-साथ नहीं चलने देती, पीछे छोड़ आती है।

मामला कुछ गम्भीर न था; और दिन होता तो शायद निर्मला की इन शरारतों को सावित्री हँसी समझकर टाल देती, परन्तु यह उद्दण्ड लड़की सबेरे से ही उसके प्रिय तथा आवश्यक कार्य में बार-बार बाधा डाल रही है। एक हल्की चपत निर्मला को लगाते हुए माँ ने डाँटकर कहा, ''बस, कल ही स्कूल से तेरा नाम कटवा दूँगी। यह सब तेरे साहबी स्कूल की शिक्षा का नतीजा है। जरा सी लड़की ने घर-भर में आफत मचा रखी है। अभी से भाई-बहनों की शकल-सूरत नहीं भाती। बड़े होने पर न जाने क्या-क्या करेगी?'' फिर थाली में पूरी, तरकारी

डालकर बच्चों के आगे रखते हुए जरा धीमे स्वर में कहा, ''देखो निर्मला, जब मैं तुम्हारे बराबर की थी, तो अपने भाई-बहनों को कभी तंग नहीं करती थी। कभी अपने माता-पिता को दुख नहीं देती थी।'' किन्तु यह बात कहते हुए भीतर-ही-भीतर सावित्री को कुछ झिझक सी हो आई।

●

''हम दोनों सीता के घर से जुलूस देखेंगे माँ, अच्छा!''—कमल ने विनम्र स्वर में अनुमति चाही।

''नहीं जी, क्या अपने घर से दिखाई नहीं पड़ता?''

माँ ने देखा दरवाजे की ओट में निर्मला खड़ी थी-कैसी चालाक लड़की है, इस गरीब को आगे करती है, जब खुद कुछ कहना होता है।

''जाओ, जाना हो तो।'' सावित्री ने झुँझलाकर उत्तर दिया।

पाँच बजे मुहर्रम का जुलूस निकलने वाला था। पल-भर में चौराहे पर सैकड़ों मनुष्यों की भीड़ इकट्ठी हो गई। सावित्री का ध्यान कभी काले-हरे, रंग-बिरंगे वस्त्र पहने जनसमूह की ओर, और कभी जुलूस के कारण रुकी हुई मोटर गाड़ियों में बैठे हुए व्यक्तियों की ओर अनायास ही खिंच रहा था। इधर बालिका निर्मला के होश-हवास एकाएक गुम से हो गए, जब जल्दी से वापस लौटकर आते ही उसे सारे घर में कमल की परछाईं तक नजर न आई। व्याकुल-सी हो वह एक कमरे से दूसरे में और फिर बरामदे में पंखहीन पक्षी की नाईं फड़फड़ाती हुई दौड़ने लगी। उसकी आँखों के आगे अँधेरा-सा छा गया। उसे सब कुछ सुनसान-सा प्रतीत होने लगा। वह माँ से कई बार छोटे बच्चों के भीड़-भाड़ में खो जाने का हाल सुन चुकी है। आह...उसका भैया...कमल...वह क्या करे?

नीचे की सड़क पर भाँति-भाँति के रंग-बिरंगे खिलौने, नए-नए रंग के गुब्बारे, कागज के पंखे, पतंग और भिन्न-भिन्न प्रकार के सुर निकालते हुए बाजे लाकर बेचने वालों ने बाल-जगत् के प्रति एक सम्मोहन जाल-सा बिछा रखा है। कुछ दूर से मानो नेपथ्य में से ढमाढम-ढमाढम ढोलबाजों की ध्वनि बजती आ रही है। निर्मला इन सब चित्ताकर्षक चीजों को बिना देखे-सुने ही भीड़-भाड़ को चीरती हुई वेगपूर्वक भागती-भागती सीता के घर भी हो आई, पर कमल तो वहाँ भी नहीं है। रोते-रोते निर्मला की आँखें सूज आई, चेहरे का रंग सफेद पड़ गया। आखिर वह हिचकियाँ लेते हुए रुँधे गले से माँ के पास जाकर बोली—''कमल, कमल तो सीता के घर भी नहीं है!''

सावित्री का तन-बदन एक बार सहसा काँप उठा। क्षण भर में भीड़, मोटर और गाड़ियों के भय से कई अनिष्ट आशंकाएँ उसकी आँखों के आगे घूम-सी गईं किन्तु वह अपने भीरु लड़के की

नस-नस से परिचित थी। उसे पूरा विश्वास था कि कमल जरूर ही कहीं-न-कहीं किसी दुकान पर खड़ा होकर अथवा किसी नौकर के साथ जुलूस देख रहा होगा। फिर भी उसने फूट-फूटकर रोती हुई निर्मला को हृदय से नहीं लगाया; और न उसे धीरज बँधाया, बल्कि आश्चर्य-चकित-सी हो, आश्वासन का एक शब्द तक कहे बिना मानो वह अपनी लड़की की रुलाई को समझने का प्रयत्न कर रही थी। रह-रहकर एक नूतन अनुभूति उसके मन में होने लगी, मुझसे भी कहीं अधिक, भला माँ के दिल से भी ज्यादा-किसी और को कमल की चिन्ता हो सकती है? और यह निर्मला तो रात-दिन कमल को सताया करती है।

जुलूस समाप्त हो गया। क्रमशः दर्शकों के झुण्ड भी छिन्न-भिन्न होने लगे। मोटरगाड़ियों का धड़ाधड़ आना-जाना पूर्ववत् जारी हो गया; और सामने ही फुटपाथ पर पड़ोसी डॉक्टर साहब के नौकर का हाथ पकड़े कमल घर आता हुआ दिखाई दिया।

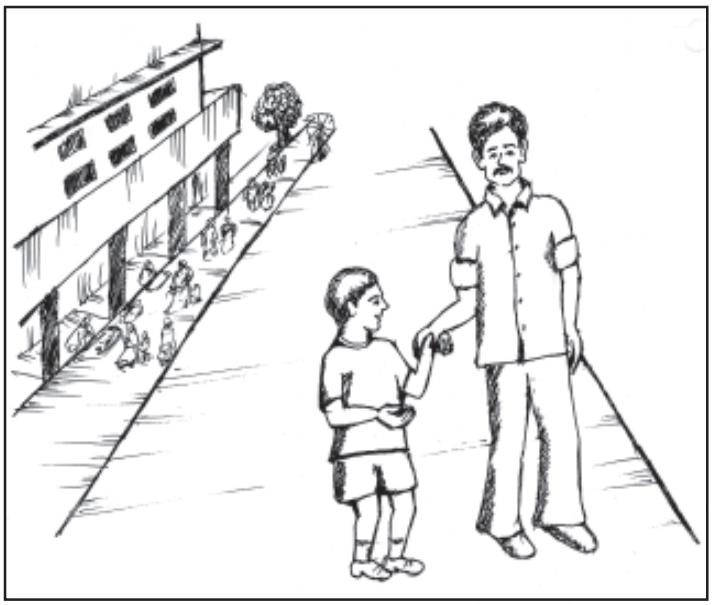

सीढ़ियों में से फिर सिसकने की आवाज सुनकर सावित्री ने देखा तो मन्त्र-मुग्ध सी रह गई। कमल को भुजा-पाश में बाँधे निर्मला दुगने वेग से रो रही है। उसके कोमल गुलाबी गाल, मोटे-मोटे आँसुओं से भीगे जा रहे हैं; और वह बार-बार कमल का मुख चूम-चूमकर कह रही है—''पगले, तू कहाँ चला गया था? तू क्यों चला गया था?''

सावित्री का हृदय उमड़ आया। पुनीत प्रेम के इस दृश्य को देखकर एक आनन्द की धारा-सी उसके अन्तःस्थल में बहने लगी। झरते हुए आँसुओं के साथ उसने कमल की जगह निर्मला को छाती से लगाकर उसका मुँह चूम लिया; और कहा—''बेटा, तुम बिना कहे क्यों चले जाते हो? बहन को प्यार करो, देखो वह तुम्हारी खातिर कितना रोई है।

तो क्या, मैं नहीं रोया था?'' कमल बोल उठा।

''तुम क्यों रोए थे जी?'' माँ ने कौतूहलवश पूछा।

''मुझे दीदी की याद आ रही थी।''

शब्दार्थ

बाथरूम=स्नानागार, नहाने का स्थान। **बिंधना**=अटकना, रुक जाना। **अन्त:स्थल**=हृदय। **पुलकित**=प्रसन्न होना। **सिसकियाँ**=रुक-रुककर रोना, सिसक-सिसक कर रोना। **कुतूहलपूर्ण**=उत्सुकता से, जिज्ञासा से। **तुच्छ**=हेय, ध्यान न देने योग्य। **अनायास**=बिना प्रयास के। **आशंकाएँ**=चिन्ता, सन्देह। **दुर्लभ**=मुश्किल से प्राप्त। **छिन्न-भिन्न**=तितर-बितर होना, अलग-अलग होना। **नाईं**=की भाँति, की तरह। **अनिष्ट**=अनिच्छित, अनचाहा। **भीरु**=डरपोक। **निकृष्ट**=नीच, घृणित, बुरा। **उग्र**=तीव्र। **ग्रामोफोन**=गाने सुनने का एक यंत्र। **दूरबीन**=दूर की वस्तुओं को देखने का यंत्र। **आरोप**=दोष मढ़ना, दोष लगाना। **उद्दंड**=शरारत करने वाला। **झुँझलाना**=गुस्सा और क्रोध प्रकट करना। **चित्ताकर्षक**=मनमोहक, अपनी ओर खींचने वाला। **अनुभूति**=विचार और कल्पना के सहयोग से जो अनुभव किया जाए। **पुनीत**=पवित्र। **रोम-रोम पुलकित होना**=अत्यधिक प्रसन्न होना। **होश-हवास खोना**=सोचने-समझने की स्थिति खोना। **चेहरे का सफेद पड़ना**=हताश होना, जड़वत होना। **फूट-फूट कर रोना**=बहुत जोर से रोना।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **(क) सही जोड़ी बनाइए—**

- पंखहीन – कपड़ा
- मंगल – गला
- रेशमी – पक्षी
- रुंधा – कामनाएँ

(ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

- न जाने कितनी...स्मृतियाँ उसके अन्त:स्थल में उठकर बिंधी सी जा रही थीं।(मीठी/कड़वी)
- भाई-बहन सदा .... नहीं रहते। (अलग-अलग/साथ-साथ)
- करीब आधे घण्टे के बाद किंचित........ सा मुख लिए निर्मला कमल को साथ लेकर स्कूल चली गई। (उदास/पुलकित)
- रह-रहकर एक.......... अनुभूति उसके मन में होने लगी। (नूतन/पुरातन)
- क्रमश: दर्शकों के झुण्ड भी........ होने लगे। (छिन्न-भिन्न/इकट्ठे)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) सावित्री के अंत:स्थल में किसकी यादें बसी थीं?

(ख) सावित्री को अपनी बक-बक सारहीन सी क्यों लगी?

(ग) रोते-रोते निर्मला के चेहरे का रंग सफेद क्यों पड़ गया?

(घ) माँ के दिल से भी अधिक कमल की चिन्ता और किसको थी?

(ङ) माँ की झिड़कियों का बालिका पर क्या प्रभाव पड़ा?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-से-पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) कमल के आँखों से ओझल होते ही निर्मला की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

(ख) 'जब इन्हीं दुर्लभ सूरतों को देखने के लिए तरसोगी।' कहकर सावित्री क्या कहना चाहती है?

(ग) भाई को भेजे जाने वाले उपहार के साथ सावित्री की स्मृतियाँ किस प्रकार जुड़ी हुई हैं?

(घ) निर्मला के फूट-फूट कर रोने का कारण स्पष्ट कीजिए।

(ङ) कमल और निर्मला का आपस में लड़ना और फिर एक-दूसरे से मिलने को आतुर होना वस्तुत: आत्मीय स्नेह का ही प्रमाण है। इस कथन की पुष्टि कीजिए।

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों का सही उच्चारण कीजिए—

श्वेत, स्मृतियाँ, मुखाकृति, प्रेमाश्रु, झिड़कियाँ, प्रस्फुटित, चित्ताकर्षक

5. सही वर्तनी पर गोला लगाइए—

अन्तस्थल,	अन्त:स्थल,	अन्तसथल
सकूल,	ईस्कूल,	स्कूल
झुँजलाकर,	झुँझलाकर,	झूँझलाकर
तसवीर,	तशवीर,	तस्वीर

6. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए—

रोम-रोम पुलकित होना, होश-हवास गुम होना, चेहरे का रंग सफेद पड़ना, फूट-फूट कर रोना

7. दिए गए शब्दों में से हिन्दी (तत्सम्, तद्भव) और आगत (अंग्रेज़ी तथा उर्दू) शब्द पृथक-पृथक लिखिए—

बॉक्स, आश्वासन, चीज़, बाथरूम, बैग, मुस्कुराना, ग्रामोफोन, खूब, मामला, शरारत, स्कूल, हल्की, आफत, शक्ल-सूरत, जुलूस, दरवाज़ा, गरीब, होश-हवास, सम्मोहन, नेपथ्य, सुनसान, जरूर, नूतन

ध्यान दीजिए

8. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए—

रामलाल जी भोपाल में शिक्षक हैं। उनके एक पुत्र और एक पुत्री है। दोनों भाई-बहन पढ़ाई में तेज़ हैं, और एक साथ बैठकर पुस्तकें पढ़ते हैं। उन्हें जब कठिनाई होती है, तब पिताजी उनकी सहायता करते हैं। बच्चों की माँ सावित्री उन्हें वीरता, त्याग और बलिदान की कहानियाँ सुनाया करती है।

उपर्युक्त गद्यांश में रेखांकित शब्द रामलाल, सावित्री व्यक्ति के नाम का बोध करा रहे हैं। भोपाल स्थान का नाम है। पुस्तक वस्तु का नाम है।

पुत्र-पुत्री, भाई-बहन, पिताजी-माँ ये नाम किसी व्यक्ति विशेष के लिए प्रयुक्त न होकर किसी भी पुत्र-पुत्री, भाई-बहन, पिताजी, माँ के लिए प्रयुक्त किए जा सकते हैं।

पढ़ाई, कठिनाई, सहायता, वीरता, त्याग, बलिदान इत्यादि शब्द किसी गुण, दशा, भाव के नाम हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु और भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

ऐसे शब्दों को जो किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु, विचार या भाव का बोध कराते हैं, उन्हें 'संज्ञा' कहते हैं।

यह भी जानें

संज्ञा के तीन प्रकार हैं—व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा।

क्र.	संज्ञा का नाम	आशय	उदाहरण
1.	व्यक्तिवाचक	किसी एक विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो।	राकेश, शीला, रामचरित मानस, भाषा-भारती, होली, मंगलवार, विन्ध्याचल, नर्मदा आदि।
2.	जातिवाचक	किसी वर्ग के सभी प्राणियों, वस्तुओं या स्थानों का बोध हो।	बहन, गाय, तोता, घड़ी, पुस्तक, नगर, हाथी, नदी, पहाड़ आदि।
3.	भाववाचक	किसी भाव, गुण, दशा अथवा व्यापार का बोध हो।	सत्य, प्रेम, अच्छाई, मिठास, सजावट, ममता, मित्रता, बुढ़ापा, पढ़ाई आदि।

8. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर व्यक्तिवाचक, जातिवाचक व भाववाचक संज्ञा को छाँटकर लिखिए—

(क) तितली के एक पंख की कढ़ाई की जा चुकी थी।

(ख) उदास सा मुख लिए निर्मला स्कूल चली गई।

(ग) एकाएक सावित्री के चेहरे पर हँसी आ गई।

(घ) पाँच बजे मोहर्रम का जुलूस निकलने वाला था।

(ङ) सावित्री ने कॉपी रखने के लिए कुर्सी की सफाई की।

अब करने की बारी

- भाई-बहन के प्यार से संबंधित कोई अन्य कहानी खोजकर पढ़िए।
- भाई-बहन के प्यार पर आधारित अपने क्षेत्र में प्रचलित लोकगीतों का संग्रह कीजिए।
- मेले अथवा भीड़ भरे स्थान पर बच्चों को कौन-कौन सी सावधानियाँ रखनी चाहिए? लिखिए।

❑❑